तृतीय अध्याय

"कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ"

तृतीय अध्याय

"कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ"

3·1 प्रास्ताविक

3·2 सामाजिक समस्याएँ

3·3 साम्प्रदायिक समस्याएँ

3·4 प्रेम समस्याएँ

3·5 वेश्या समस्याएँ

3·6 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

"कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ"

3·1 प्रास्ताविक :-

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान करने में कमलेश्वरजी की एक विशेष भूमिका रही है। कमलेश्वरजी को एक सफल साहित्यकार के रूप में सफलता प्राप्त हो चुकी है। कमलेश्वरजी ने अपने युग की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रधानता दी है। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, इसी बात की सच्चाई का स्पष्टीकरण इनके उपन्यासों में हुआ है। इनके अधिकांश उपन्यासों में शहरी जीवन के निम्न मध्यवर्ग का ही चित्रण मिलता है। इनके उपन्यासों में आम आदमी की जिन्दगी, बनते-बिगडते रिश्ते, प्यार, नफरत, आर्थिक अभाव, पति-पत्नी की समस्या आदि का चित्रण दिखाई देता है। इन्होंने अपने उपन्यासों में निम्न मध्य वर्ग का शोषण यथार्थ रूप से चित्रित किया है। कस्बे में रहनेवाले लोगों की आशा-निराशा आदि का बड़ा ही यथार्थ चित्रण इनके उपन्यासों में हुआ है। कमलेश्वरजी प्रगतिशील विचारधारा के एक आधुनिक साहित्यकार हैं। इनके लेखन का मुख्य उद्देश्य यह है कि निम्न-मध्य वर्ग के आर्थिक दशा का हुबहू चित्रण करना। उनके उपन्यासों में आधुनिक सभ्यता और उसमें केवल नाइट क्लब, किचन, कारडोर या बार की शोरोशराब का चित्रण नहीं दिखाई देता।

कमलेश्वरजी के प्रत्येक उपन्यासों में कोई-न-कोई समस्या उजागर होकर सामने आई है। इस दृष्टि से देखा जाय तो उनके सभी उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास हैं। कमलेश्वरजी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक,

आर्थिक समस्या का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में छोटे कस्बों एवं बड़े शहरों की जिन्दगी का सही-सही चित्रांकन किया है। उदाहरण के तौर पर देखिएगा - "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला", "लौटे हुए मुसाफिर", "समुद्र में खोया हुआ आदमी", "काली आँधी", "आगामी अतीत" आदि उपन्यासों में आर्थिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा राजनीतिक समस्याएँ दिखाई देती हैं। अतः कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में जिन समस्याओं को प्रस्तुत किया है वे निम्नांकित हैं।

सामाजिक समस्याएँ

साम्प्रदायिक की समस्या

प्रेम समस्या

वेश्या समस्या

3·2 **सामाजिक समस्याएँ** :-

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" कमलेश्वरजी का सबसे पहला सामाजिक समस्या-प्रधान उपन्यास है। इसमें मैनपुरी कस्बे के सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। मैनपुरी कमलेश्वर का जन्म स्थान रहा है। उन्होंने अपने इस पहले उपन्यास के बारे में अपना बयान देते हुए कहा है, "यह मेरा पहला उपन्यास है। लिखा सन 56 में गया था। यह उसी समय पूरा का पूरा "हंस" में छपा था। भाई अमृतराय ने छपा था। उसी समय श्री·कृष्णचंद बेदी ने इसे हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी से प्रकाशित किया। फिर सन 68-69 या शायद इसके बाद श्री प्रेमकपूर ने इस पर फिल्म बनाई बदनाम बस्ती।···मेरे लिए यह उपन्यास उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय मेरे लिए माँ और मेरी जन्मभूमि मैनपुरी रहा था। इसे बेचकर करीब 20 साल मेरी आत्मा दुखती रही - लगता रहा, जैसे मैंने अपनी जन्मभूमि या माँ बेच दी हो।"[1]

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में कमलेश्वरजी ने अपनी जन्मभूमि मैनपुरी की जिन्दगी को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। मैनपुरी के निवासियों की सामाजिक

समस्याओं का बेखूबी अंकन किया है। शिवराज, रंगीले, बंसिरी और सरनाम की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं। बंसिरी एक अच्छी औरत बनकर जीना चाहती थी। पर सरनामसिंह ने उसे रखैल बना दिया था। इसलिए उसके दिल में सरनामसिंह के प्रति नफ़रत पायी जाती है। बंसिरी सरनामसिंह को खूब गालियाँ देता है।

बाजामास्टर की मजबूरी का चित्रण "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में देखा जा सकता है। बाजामास्टर कहाँ-कहाँ नहीं भटका ? पर समाज में उसकी कोई इज्जत नहीं है। वह शिवराज से कहता है - "सबसे बुरा यही लगता है शिवराज की ओर लोग अजीब हिकारत से देखते हैं। आज बड़ी-बड़ी संगीत सभाओं में जाता तो कदर और होती। लेकिन यह सब अपने बस का नहीं है। जब-जब यों ही घूमता फिरता हूँ, तब लगता है, यह सब बेकार है। न इज्जत, न पैसा, न दोस्त, न हमदर्द।...संगीत की टयूशने की, पर कहीं भी कुछ ऐसा नहीं मिला जिससे मन को संतोष मिलता। यार सब बेकार है।"[2]

इस उपन्यास में शिवराज का चरित्र विशेष प्रकार का बन पड़ा है। वह बड़ा भावुक है। वह हेम नाम की लड़की को चाहता है। पर हेम का विवाह किसी और के साथ हो जाता है। तब शिवराज का दिल टूट जाता है। वह अकेला रह जाता है। पर आगे चलकर वह बाजा मास्टर का साथ निभाता है। फिर वह कमला की ओर खिंच जाता है। इतना ही नहीं तो शिवराज उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार होता है। कमला भी तो बेसहारा थी। शिवराज उसे सहारा देना चाहता है। वह कमला को छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहता। जहाँ कमला रहती, वहाँ वह रहना चाहता है।

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में रंगीले को लेखक ने एक मस्तमौला के रूप में प्रस्तुत किया है। रंगीले बड़ा मनमौजी है। रंगीले अपने में मस्त और फक्कडपन से जीता था। वह किसी के साथ कभी झगडा नहीं करता था। आवारा लोगों के साथ उठता बैठता था पर उनकी बदमाशियों से दूर रहता था। देवानंद और सुरैया दोनों शादी करनेवाले है यह बात रंगीले को सह नहीं पायी। सुरैया उसके सपनों

की रानी थी। रंगीले की अपनी अलग दुनिया है। रंगीले लोगों में और पुलिसवालों में मशहूर था।

आखिर रात में रंगीले बंसिरी से विवाह कर लेता है। मगर कुछ दिनों बाद झूठी गवाही के फलस्वरूप उसको तीन साल की जेल होती है। डाकू मंगल के साथी रंगीले को खूब पीटते हैं। एक बार देवानंद से उसकी दुश्मनी हो गयी क्योंकि देवानंद और सुरैया दोनों आपस में प्यार करने लगे थे। वास्तव में सुरैया रंगीले के सपनों की रानी थी। इसलिए उसके दिल में देवानंद से दुश्मनी पैदा हुई।

रंगीले को फिल्में देखने का बड़ा शौक है। वह फिल्म देखना पसंद करता है। वैसे रंगीले अपनी बस्ती में चर्चित रहा है। वह बस्ती के लोगों के काम आता है। किसीसे लड़ाई-झगड़ा उसे पसन्द नहीं है। रंगीले की सबसे दोस्ती रही है। रंगीले को सुरैया से प्यार है। पर जब उसे पता चलता है कि उसका ब्याह देवानन्द से होनेवाला है, तब यह बात उसे बर्दाश्त नहीं होती है। वैसे उसकी अपनी दुनिया है। वह पढ़ा-लिखा नहीं है। रंगीले पैसों का गुलाम है। वह पेशेवर गवाह बन जाता है। पर आगे चलकर वह बेकार हो जाता है। फिर गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लेता है। जगह-जगह जाकर नारे लगाता है। अन्त में रंगीले बंसिरी से ब्याह भी कर लेता है। समय-समय की बात है एक दिन वह झूठी गवाही के कारण पकड़ा जाता है। उसकी खूब पिटाई भी होती है।

इस उपन्यास में सरनाम का अपना-अपना स्थान रहा है। वह भी बंसिरी को चाहता है। पर बंसिरी उससे नफरत करती है। सरनाम डाकुओं के साथ रहनेवाला आदमी है। वह शिवराज को सूचित करता है कि औरत से दूर रहना चाहिए। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में बंसिरी का भी अपना अलग स्थान रहा है। बंसिरी रंगीले की औरत है। बंसिरी सरनाम के प्रति नफरत करती है क्योंकि उसने बंसिरी को बाजारू औरत समझा था। बंसिरी सरनाम को शाप देती है। वह किसी की घरवाली

बनकर जीना चाहती है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज बंसिरी को अच्छी तरह से जीने नहीं देता। यह भी एक सामाजिक समस्या दिखाई देती है।

कमला भी सोलह साल की लड़की है। वह बड़ी ही समझदार है। शिवराज कमला को चाहता है। वह कमला को साथ निभाता है। संक्षेप में कमलेश्वर ने इन पात्रों की जिन्दगी के यथार्थ को "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वरजी का "डाक बंगला" आत्म-कथात्मक शैली में लिखा गया प्रभावी उपन्यास है। कमलेश्वर के उपन्यासों में कोई-न-कोई समस्या उजागर होकर पाठकों के सम्मुख आती है। "डाक बंगला" में सामाजिक समस्या के अंतर्गत प्रेम समस्या उभरकर हमारे सामने आती है। आज का समाज एक बेसहारा स्त्री को सहारा भी नहीं देता उसके साथ सिर्फ खिलवाड ही करता है। इस उपन्यास में "इरा" सच्चा प्यार पाने के लिए तड़पती है। लेकिन उसकी जिन्दगी में जितने भी पुरूष आये उनमें से एक ने भी उसे सच्चा प्यार नहीं दिया। उसके साथ सिर्फ खिलवाड ही किया। इरा अपनी मजबूरी को प्रस्तुत करती हुई कहती है कि औरत बगैर आदमी के रह नही सकती। चाहे उसके साथ उसका पति हो, या भाई या बाप। कोई न हो तो नौकर ही हो। पर पुरूष का सहारा जरूर चाहिए।

इस उपन्यास की नायिका "इरा" की प्रेम समस्या का बखूबी चित्रण हुआ है। वास्तव में इरा एक विधवा औरत है। किसी विद्रोही की गोली लग जाने से उसके पति का देहान्त होता है। तब से लेकर वह बेचैन बनी हुई है। "इरा" की जिन्दगी में एक-एक करके चार पुरूष आते हैं, पर इनमें से कोई भी उसे अंतिम प्यार दे नहीं पाता है। इसी बात का उसे बड़ा अफसोस है। इरा के प्रेम की त्रासदी को कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। "इरा" अपनी इस त्रासदी को तिलक के सामने प्रस्तुत करती हुई दिखाई देती है। इरा दार्शनिक अंदाज

में कहती है, "बहुत देखा है और बहुत सहा है मैंने तिलक। लोग आत्मा की बात करते हैं, पर तन पर ऐकान्तिक अधिकार चाहते हैं - ऐसा अधिकार जो उनकी वासना की घडी के मुताबिक चलता है···आज मैं निहायत बुरी औरत हो सकती हूँ तिलक। पर अगरी उसी को अपना तन दे दूँ तो बहुत अच्छी हो जाऊँगी। चार दिन बाद वह मुझसे छिटककर अलग जा सकता है। पर फिर कभी मुझे बुरा नहीं कहेगा।···तुम्हारे समाज में हर आदमी कुछ करने आता है और हर औरत कुछ भोगने आती है। इसलिए हर कँवारी माँ की कोख से तुम्हारे प्यार भरे पापों ने जबरदस्ती संताने पैदा की है और उन संतानों को तुमने पैगम्बरों का दर्जा दिया है।"[3]

तिलक इरा को चाहता है। वह अकसर इरा का साथ देने की कोशिश करता है। एक दिन वह इरा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। मगर इरा उससे ब्याह करने से इन्कार करती है। कारण यह है कि जिससे उसने अपनी कहानी कह दी है, वह उससे कभी ब्याह नहीं करेगी। इरा के चले जाने से तिलक भी बड़ा उदास हो जाता है।

इरा का प्रेमी है सोलंकी। वह भी उससे अन्त तक प्यार निभाने का वादा करता है। पर वह भी अंतिम प्यार दे नहीं पाता। जिसके कारण इरा का दिल टूट जाता है। इरा की जिन्दगी में विमल भी आता है। विमल इरा का सहपाठी रहा है। दोनों नाटकों को समर्पित है। शिमला में नाटय समारोह के समय दोनों की मुलाकात होती है। तब पहली बार विमल ने इरा को छू लिया था। जिससे वह बडी रोमांचित हो उठी थी। आखिर इरा का साथ छोड़कर विमल बम्बई चला जाता है। वह भी इरा को अपना अंतिम प्यार नहीं दे सका। विमल को आखिर एक भयानक बीमारी लग जाती है। इसी में वह दम तोड़ देता है। उसकी मौत के बाद भी इरा उसका प्यार भूल नहीं सकती।

"डाक बंगला" का बतरा भी इरा का प्रेमी रहा है। बतरा विधुर था। उसने अपने यहाँ इरा को नौकरी दे दी थी। उसकी "शीला" नाम की प्रेमिका थी। वह कुछ दिन बतरा के पास गुजर देती तो कुछ दिन किसी और के पास। एक रात बतरा इरा को शीला की कहानी बता देता है। यही वो शीला है, जिसने इरा को नौकरी से हटकार जलील किया था। बतरा का पेशा था एक खूबसुरत बंगला रखना, एक कार रखना, फोन रखना और क्लबों में रातें गुजारना।

दरअसल डाक बंगला एक नायिका प्रधान उपन्यास है। वह केन्द्रबिन्दु के रूप में सामने आती है। इरा एक बेवा औरत है। उसने अपने जीवन में चार पुरूषों से प्रेम किया लेकिन कोई भी उसे अंतिम प्रेम दे नहीं पाया। इरा खुबसूरत है। उसके होठों पर सूखापन रहता है। उसे नाटकों से बेहद लगाव रहा है। उसने एक नाटक लिखा था "सपनों का राजकुमार" जिसमें उसने राजकुमारी की भूमिका निभायी थी। इरा का मानसिक संघर्ष देखने जैसा बन पड़ा है। कभी-कभी वह दार्शनिक की तरह बात करती है।

तिलक भी डाक बंगला का प्रमुख पात्र है। उसका इरा से परिचय होता है। परिचय फिर प्यार में बदल जाता है। वह इरा के सामने विवाह करने का प्रस्ताव भी रखता है। आगे चलकर इरा चंडीगढ चली जाती है और तिलक फिर अकेला और दुःखी हो जाता है। सोलंकी भी इरा को चाहता है पर शराबी है। उसको घोडा दौडाने का शोक रहा है। फिर विमल इरा के जीवन में आता है। उसे भी नाटकों से लगाव रहा है। शिमला के नाटक समारोह में हमें दोनों का परिचय होता है। तब इरा रोमांचित हो जाती है। पर अन्त में वह भी इरा का साथ छोड देता है। पर वह इरा के लिए नौकरी की कनस्थर करता है। विमल को अन्त में बीमारी से परेशान होना पडता है और उसमें ही उसका देहान्त हो जाता है। विमल की तरह बतरा भी इरा का प्रेमी था। उसकी पन्ती का देहान्त हो जाता है। चालीस साल की उसकी उम्र है। वह अपने यहाँ इरा की नौकरी का इंतजाम करता है। वह शराबी है। शीला नाम की उसकी एक और प्रेमिका

है। बतरा का अपना एक बंगला है, कार है और वह क्लबों में रातें गुजारता रहता है।

संक्षेप में इतना ही कह सकते हैं कि इरा की जिन्दगी में चार पुरुष आयें पर कोई भी उसे सच्चा प्यार दे नहीं पाया। अपनी मजबुरी को प्रस्तुत करती हुई इरा कहती है, "पर तिलक। यह तुम्हारी दुनिया बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बगैर आदमी के रह नहीं सकती।····चाहे उसके साथ उसका पति हो, या भाई या बाप। कोई न हो तो नौकर ही हो। पर आदमी की छाया जरूर चाहिए···इसलिए हर लड़की एक कवच ढूँढती है···वह चाहे पति का हो, भाई या बाप का, किसी झूठे रिश्तेदार का। इस कवच के नीचे वह अच्छा बुरा हर तरह का जीवन बिता सकती है। उसे पहनने के लिए जैसे एक साडी चाहिए वैसे ही यह कवच भी चाहिए।"[4]

कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया है। यही बात उनके "तीसरा आदमी" उपन्यास में देखी जा सकती है। दरअसल "तीसरा आदमी" कमलेश्वरजी का बड़ा ही चर्चित उपन्यास है।

कमलेश्वर के उपन्यास यात्रा का तीसरा पडाव है "लौटे हुए मुसाफिर" कमलेश्वर का यह उपन्यास साम्प्रदायिक समस्या को लेकर लिखा गया श्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। यह समस्या सामाजिक समस्या के अंतर्गत आती है। कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में एक छोटीसी बस्ती चिकवों की बस्ती में आये परिवर्तनों को प्रस्तुत किया है। "चिकवों की बस्ती लौटे हुए मुसाफिर" का केन्द्रबिन्दु है। कमलेश्वरजी ने चिकवों की बस्ती का आज़ादी से पहले, आज़ादी के वक्त और आज़ादी के समय का बड़ा ही हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। आज़ादी से पूर्व चिकवों की बस्ती के लोग चाहे हिन्दू हो या मुसलमान दोनों बडे प्यार से रहते थे। उनमें भाईचारा था। उनमें कभी साम्प्रदायिक कट्टरता के दर्शन नहीं हुए। चाहे ईद की बात हो या चाहे त्यौहार की दोनों सम्प्रदाय के लोग एक दूसरे के समारोह में बड़े

प्यार से शामिल होते थे। मगर कुछ दिनों बाद मुसलमानों में जिन्ना साहब की चर्चा शुरू हुई और यह चर्चा कथानक का केन्द्रबिंदु है।

कमलेश्वरजी का चौथा उपन्यास "समुद्र में खोया हुआ आदमी" आर्थिक समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। उनका पाँचवा उपन्यास "तीसरा आदमी" सामाजिक समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इसमें कमलेश्वरजी ने बताया है कि अगर भूल से भी पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है, तब बने हुए रिश्ते भी टूट जाते हैं। ऐसे बहुत से परिवार हैं कि जो इसी कारण टूटे हुए हैं। संपूर्ण उपन्यास में शक की छाया मँडराती हुई दिखाई देती है। मैं की पत्नी है चित्रा इन दोनों के बीच में तीसरा आदमी सुमन्त आ जाता है। शक की दीवार धीरे-धीरे मजबूत बन जाती है। एक बहुत बडी आँधी आती है और मैं यह सोचता है कि मेरे पहले ही कोई चित्रा के पास आकर चला गया है। यह उपन्यास भी सामाजिक समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है।

"काली आँधी" उपन्यास में कमलेश्वरजी के मालती और जग्गी बाबू की असफल प्रेम कहानी को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास राजनीतिक समस्या को सामने रखकर लिखा गया है।

कमलेश्वरजी का "आगामी अतीत" उपन्यास भी सामाजिक समस्या पर आधारित उपन्यास है। "आगामी अतीत" के अंतर्गत वेश्या समस्या भी आ जाती है।

संक्षेप में इतना कहा जाता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ तो जरूर हैं, लेकिन दूसरी भी बहुत सारी समस्याएँ दिखाई देती हैं। ये भी समस्याएँ सामाजिक समस्या के अंतर्गत आ जाती है।

"समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास कमलेश्वरजी का सामाजिक तथा आर्थिक समस्या प्रधान उपन्यास है। दरअसल यह उपन्यास परिवारों की टूटन की समस्या को लेकर कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत किया है। समाज मानो सक सागर है।

जिसमें रोजमर्रा की आर्थिक समस्याएँ हैं और इन सारी प्रस्तुत आर्थिक समस्याओं से आज का आदमी खो गया। वह वापस लौटकर आयेगा या नहीं इसका कुछ पता भी नहीं लगता।

निम्न-मध्यवर्गीय समाज और उनकी सामाजिक समस्याओं का यह जीता-जागता और सजीव चित्र है। इस निम्न-मध्यवर्ग का सुख-दुःख ज्यादह से ज्यादह दुःख ही दुःख बडे यथार्थ रूप से व्यक्त हुआ है।

इस उपन्यास में श्यामलाल, बीरन, समीरा, तारा इन सब की अपनी-अपनी परेशानियाँ हैं। यह परेशानियाँ आर्थिक समस्या के कारण निर्माण हो गयी है। श्यामलाल कुछ बनने के अरमान लिए दिल्ली चले जाते हैं। पर बात बन नहीं पाती। दिल्ली में एक ट्रान्सपर्ट कंपनी में क्लर्क की नौकरी कर लेते हैं। पर एक दिन इसी नौकरी से भी हाथ धो बैठते हैं। उनकी सब आकांक्षाएँ खंडित हो जाती है। परिवार की देखभाल करना उनके लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है। अपने बेटे पर उनका बडा विश्वास है। उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि एक दिन बीरन पढ-लिखकर कमाने लायक बनेगा और अपनी जो आर्थिक दशा है वह बदल जायेगी। लेकिन ऐसा तो सोचता है कि पिताजी की जिम्मेदारियाँ अब कम हो जायेगी। पर अफसोस की बात है। एक दिन बीरन समुद्र में खो जाता है। परिवार के सारे सपने ही टूट जाते हैं। सब का सब परिवार बिखर जाता है।

आर्थिक दशा बिगड जाने के कारण विवश श्यामलाल हमेशा हालातों से संघर्ष करते रहते हैं। मगर जब बीरन समुद्र में खो जाता है, तो उनकी सारी आशाएँ खाक में मिल जाती हैं। सारे सपने, सारे अरमान टूट जाते हैं। एक तरह से मानों आसमान ही उन पर टूट पडता है।

3·3 साम्प्रदायिक समस्या

साम्प्रदायिकता की समस्या का चित्रण कमलेश्वरजी ने "लौटे हुए मुसाफिर" उपन्यास में बखुबी किया है। कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में एक छोटी सी बस्ती

चिकवों की बस्ती में आये परिवर्तनों को प्रस्तुत किया है। "चिकवों की बस्ती" "लौटे हुए मुसाफिर" उपन्यास का केंद्रबिंदु है। कमलेश्वरजी ने चिकवों की बस्ती को आज़ादी से पहले, आज़ादी के वक्त और आज़ादी के समय का बड़ा ही हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। आज़ादी से पूर्व चिकवों की बस्ती के लोग चाहे हिन्दु हो या मुसलमान दोनों बडे प्यार से रहते थे, उनमें भाईचारा था। उनमें कभी साम्प्रदायिक कट्टरता के दर्शन नहीं हुए। चाहे ईद की बात हो या त्यौहार की। दोनों सम्प्रदाय के लोग एक-दूसरे के समारोह में बड़े प्यार से शामिल होते थे। मगर कुछ दिनों बाद मुसलमानों में जिन्ना साहब की चर्चा शुरू हुई और यह चर्चा कथानक का केंद्रबिंदु है। 1945 का वक्त आया। एक बूँद खून नहीं गिरा। "लेकिन भीतर-ही-भीतर एक भूचाल आया था। बड़ा भयानक भूचाल, जिससे बस्ती की चूल हिल गयी थी। भीतर-ही-भीतर कुछ बिगड़ गया था। दिली इमारतें ढह गई थीं। अपनेपन का जज्बा मर गया था। नफरत की आग ने इस बस्ती को निगल लिया था।···और यह भरी-पूरी चिकवों की वह बस्ती सबसे पहले उजड़ गयी थी। पता नही, यह आग कहाँ छिपी हुई थी।"[5]

चिकवों की यह खुबसूरत बस्ती देखते-ही-देखते अपना रंग बदलती है। सलमा का पती मकसूद और यासीन, जब इस बस्ती में आते हैं, तब यह बस्ती एक नया मोड लेती है। ये दोनों मिलकर साम्प्रदायिक तनाव पैदा करते हैं। इन्सान दूसरी जाति के इन्सान की ओर नफरत की दृष्टि से देखने लगा। चारों तरफ सैलाब नज़र आ रहा था। जिसमें नफरत के कीडे बिलबिला रहे थे। जाने-पहचाने लोगों के मुर्दा चेहरे उतरते हुए बहते जा रहे थे। वे चेहरे जिन्हें देखकर अभी तक इन्सान जीता आया था। जिसमें प्यार और अपमान था। यह सब क्या हुआ ?

देखते-देखते हिन्दु-मुसलमानों में नफ़रत की आग भडक उठी। कल तक जो दोस्त थे वे आज अचानक एक दूसरे के दुश्मन बन गये। मौलाना ने मुसलमानों की हिमायत की और संघ के अधिकारियों ने हिन्दुओं का समर्थन किया। मन-ही-मन में बँटवारा हुआ। दो सम्प्रदायों के बीच एक दीवार खड़ी हुई हिन्दुस्तान-पाकिस्तान।

बँटवारे के दिनों कुछ मुसलमान पाकिस्तान चले गये और कुछ यहीं रह गये। कुछ मुसलमान अपनी इस चिकवों की बस्ती की ओर लौट पडते हैं। नसिबन उनको अपने टूटे-फूटे घरों की ओर पहुँचा देती है।

"लौटे हुए मुसाफिर" में नसीबन का चरित्र प्रभावशाली बन पड़ा है। उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक वह पाठकों के सामने रहती है। आज़ादी के बाद वह बस्ती में आये परिवर्तनों से वह दुःखी हो जाती है। क्योंकि यहाँ उसका अपना कोई नहीं है। नफरत ने इस बस्ती को बरबाद किया था। नसीबन निर्भय है। उसने काफी संघर्ष किया है। वह दूसरों से प्यार करती है। उसमें स्नेह है, ममता है। नसीबन के मन में सत्तार के प्रति स्नेह की भावना पायी जाती है। वह अनपढ़ है कि फिर भी समझदार है। वह मुसलमान है। बच्चन नामक व्यक्ति के प्रति उसके दिल में प्यार है। बँटवारे के बाद मुसलमान लोग पाकिस्तान चले जाते हैं। पर नसीबन जाना नहीं चाहती। उसे अपनी बस्ती से बहुत प्रेम है।

नसीबन की तरह सत्तार भी उपन्यास का प्रभावपूर्ण पात्र है। सत्तार पहले सर्कस कम्पनी में काम करता रहा। बस्ती में आने पर उसकी सबसे दोस्ती बनती है। वह सलमा को चाहता है। इधर सलमा का पति मकसूद वापस आता है। फिर सत्तार अकेला हो जाता है। पाकिस्तान जाने से पहले सलमा एक बार सत्तार से मिलती है।

साईं भी लौटे हुए मुसाफिर का एक पात्र है। वह अपने आपको बस्ती के मुसलमानों का नेता मानता है। उसके चरित्र की विशेषता यह है कि वह हमेशा दूसरों की राहों मे रूकावटे डालती है। वह धीरे-धीरे साम्प्रदायिकता की आग को भडकाने का काम करता है। साईं के व्यक्तित्व को जाननेवाला एक आदमी है इफ्तिकार। वह अक्सर साईं को समझाता रहता है। साईं पाकिस्तान का सपना देखता है पर खुद पाकिस्तान जा नहीं पाता। सच बात तो यह थी कि उसके दिल में अपनी

बस्ती के बारे में मोहब्बत थी। साई को अपनी गलती का एहसास होता है और वह अपनी गलती को स्वीकार कर लेता है। उसमें मानवीय कमजोरियाँ भी हैं। तभी तो वह दूसरों के बहकावे में आता है। साई हमेशा दूसरों की जिन्दगी में दखल दे बैठता है जो उसकी कमजोरी कही जा सकती है।

संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि "स्वतंत्रता के बाद देश के राजनैतिक परिदृश्य में भारी परिवर्तन आया। एक लम्बी गुलामी के बाद आज़ादी का आगमन देश की जनता के लिए एक अभूतपूर्व परिवर्तनकाल था, लेकिन सामाजिक जीवन में साम्प्रदायिकता का ऐसा भयावह बीज बो दिया गया कि बेगुनाह लोगों की हत्या और खून के बीच इस महान अवसर की खुशियाँ मातम में डूब गयी। देश का सारा सामाजिक परिदृश्य अन्धकार और परस्पर अविश्वास से दूषित हो गया।[6]

दोनों जातियों के बीच फासले बढते गये। लोक एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये। "उपन्यास में हिन्दू और मुसलमान होने की अलगाववादी भावना से अलग एक मनुष्य की तरह सदियों से साथ-साथ हँसने, खेलने वाले कंधे-से-कंधा मिलाकर चलनेवाले और सुख-दुख में सदा साथ रहनेवाले लोग सहसा दो हिस्सों में बँट गये। एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये। सहज आत्मीयता और दोस्ती की जगह परस्पर अविश्वास और घृणा ने ले ली।"[7] नसीबन खुशी से रो पडी थी वे सब बच्चे बशीर, बाकर, समजानी, फत्ते वगैरह जवान हो-होकर लौटे थे। नसीबन उन्हें अपने साथ ले गई थी···उन निशानों के पास जो अब भी बाकी थे, वह कहती है यही तेरे अब्बा का घर था,···बशीर यहीं बैठकर वह चमडा कमाया करता था, और बाकर बेटे····वह देख रहा है न····उसी के नीचे जो टूटी हुई दीवार है····वह तेरा घर था····और वो घर वो घर वह ढहा हुआ चबुतरा रमजानी के चाचा का है।"[8]

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में गौण रूप से क्यों न हो, लेकिन साम्प्रदायिकता की समस्या लेखक ने अवश्य चित्रित की है। इस उपन्यास के हापिस साहब जनता

12442
A

की निगाह में पागल हो गये हैं। आगे चलकर जब हिन्दु और मुसलमानों के बीच दंगे हो गये तब इन पर किसी ने केरोसिन डालकर आग लगा दी। इस तरह कई लोगों को जिन्दा जलाया गया। यदि देश में साम्प्रदायिकता की समस्या न होती तो इनको जलाया न जाता। आज भी हमारे देश में इस समस्या का समाधान पूर्ण रूप से नहीं हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में साम्प्रदायिकता की समस्या को भी ध्वनित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कस्बाई जिंदगी का और उस जिंदगी से संबंधित समस्याओं का सच्चाई के साथ चित्रण किया है। लेखक ने कहा है कि साम्प्रदायिकता के कारण लोग बिगड़ गये हैं। गरिबों का शोषण कर रहे हैं। मालिक मजदूरों का शोषण कर रहें हैं। दूकानदार नोकरों का और डाक्टर मरिजों का शोषण कर रहें हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की समस्याएँ केवल उत्तर भारत की नहीं बल्कि भारत के हर राज्य की हो सकती है। मैनपुरी कस्बा और वहाँ के लोगों के जीवन की समस्याएँ भारत के किसी भी कोने में मिलेगी, इसमें संदेह नहीं है। इस उपन्यास में जिन समस्याओं का चित्रण किया है वे प्रमुख रूप से महत्त्वपूर्ण है। इन सारी समस्याओं को चित्रित करना लेखक का उद्देश रहा है।

3·4 **प्रेम-समस्या :-**

कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रेम समस्या का बखुबी चित्रण किया है। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में प्रेम समस्या का चित्रण है। इस उपन्यास का शिवराज जज्बाती इन्सान है। वह हेम नामक लड़की पर आशिक होता है। मगर किसी और के साथ उसका विवाह तय हो जाता है। तब शिवराज का दिल टूट जाता है। अपने इस गम को खोजने के लिए शिवराज कोई रास्ता खोज रहा था और इसके लिए बाजामास्टर शिवराज की मदद करता है। एक नाचनेवाली औरत "कमला" से वह शिवराज की भेंट करता है। दोनों में प्रेम बढ़ता है।

कमला से शिवराज कहता है "मैं कहीं नही जाऊँगा कमला। जहाँ तुम रहोगी वही साथ रहूँगा, ऐसे ही जीवनभर·····"[9]

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में "रंगीले" की प्रेम-भावना के दर्शन होते हैं। रंगीले सुरैया का दीवाना था। जब उसे इस बात का पता चलता है कि देवानन्द और सुरैया दोनों विवाह करने वाले हैं, तब वह देवानंद का दुश्मन बन जाता है। सुरैया रंगीले के सपनों की रानी थी। सुरैया की ओर किसी ने निगाहें उठायी तो उसे बर्दाश्त नहीं होती है।

अंत में हम लोग देखते हैं कि रंगीले बंसिरी से विवाह कर बैठता है। पर झूठी गवाही के जुर्म में जब उसे जेल की सजा मिलती है तब बंसिरी अकेली रह जाती है। वैसे बंसिरी तो रंगीले की पत्नी थी पर वह शुरू-शुरू में सरनाम की ओर आकृष्ट हो जाती है। पर कुछ ही दिनों में बंसिरी के मन में सरनाम के प्रति घृणा का भाव पैदा होता है क्योंकि सरनाम बंसिरी को एक बाजारू औरत समझता था। इसीलिए बंसिरी उसे कहती है "औरत कहता है न मुझे, तेरे कारण औरत हुई। नहीं तो किसी की घरवाली होकर चैन से मर जाती। तूने अपनी समझ से घरवाली बनाया है, पर तेरे लिए औरत रहूँगी। औरत।"[10]

"डाक बंगला" में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है। डाक बंगला उपन्यास में भी कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या को प्रस्तुत किया है। इरा एक विधवा औरत है। किसी विद्रोही की गोली लग जाने से उसके पति का देहान्त होता है। तब से लेकर वह बेचैन बनी हुई है। इस उपन्यास में ज्यादह से ज्यादह प्रेम समस्या ही उभरकर हमारे सामने आती है। इस उपन्यास की नायिका हमेशा सच्चा प्यार पाने के लिए तडपती है। लेकिन उसकी जिन्दगी में जितने भी पुरूष आये उनमें से एक ने भी उसे सच्चा प्यार नहीं दिया। उसके साथ सिर्फ खिलवाड ही किया। इरा के साथ प्यार का बहाना करके उसको धोखा देने वाला पहला पुरूष विमल ही है। फिर एक के बाद एक ऐसे तीन पुरूष उसकी जिन्दगी

में आते हैं। पर अफसोस की बात यह है कि इनमें से कोई भी उसे अंतिम प्यार दे नहीं पाता। बतरा के साथ उसकी तो जैसे नयी जिन्दगी शुरू होती है। पर "इरा" जब गर्भवती रहती है, तब बतरा उसका गर्भपात करता है। कुछ दिनों बाद बतरा डाक्टर चन्द्रमोहन के साथ इरा को आसाम भेज देता है। जहाँ पर उन दोनों का विवाह भी होता है। मगर अफसोस। इरा विधवा हो जाती है।

संक्षेप में कहा जाताहै कि इरा की जिन्दगी में चार पुरूष आये पर एक ने भी उसे सच्चा प्यार नहीं दिया। यह एक असफल प्रेम का जीता-जागता उदाहरण है।

कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया है। यही बात उनके "तीसरा आदमी" उपन्यास में देखी जा सकती है। दरअसल "तीसरा आदमी" कमलेश्वर का बड़ा ही चर्चित उपन्यास है। पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है, तब रिश्तों में फासले किस प्रकार बढते जाते हैं, उसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। "तीसरा आदमी" की नायिका चित्रा है। उसका पति है "मैं"। सुमन्त "मैं" का दूरदराज का कोई रिश्तेदार है। सुमन्त खुबसूरत नौजवान है। लड़कियों की निगाहें बार-बार उसकी ओर लग जाती थी। चित्रा भी उसकी खुबसूरती से प्रभावित हो गयी। चित्रा और सुमन्त दोनों दिल्ली में सुमन्त के पास ठहरते हैं। इस बीच चित्रा सुमन्त की ओर खिंचती चली जाती है। तन-मन से दोनों करीब आते हैं। "मैं" के मन मे धीरे-धीरे शक बढ़ने लगता है। कई दिन बीत जाने पर चित्रा सुमन्त से गर्भवती रहती है। मैं जानता था कि सुमन्त का खून चित्रा के बदन में बह रहा है। इसी कारण "मैं" की बेचैनी और अधिक बढ़ने लगी। वह एक अजीब सी कश्मकश के बीच फँस जाता है। पर वह बड़ा मजबूर था। जब-जब भी "मैं" चित्रा की आँखों में झाँकता तो लगता जैसे दो नहीं चार आँखे उसको ताक रही हैं। दो नहीं चार ओठ उसको प्यार कर रहें हैं और चार बाहें उसको कस रही हैं। हमेशा एक तीसरी छाया मँडराती रहती।

कुछ दिनों बाद पता चला कि सुमन्त ने किसी होटल के कमरे में आत्महत्या कर ली। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण शायद वह मैं। वैसे देखा जाय तो "स्त्री-पुरूष या पति-पत्नी के सम्बन्ध इतने कोमल आधार पर स्थीर होते हैं कि वे अपने बीच किसी प्रकार का अन्तर सह नहीं पाते। कभी भूल से भी यदि इन दोनों के बीच किसी तीसरे आदमी ने प्रवेश किया है तो जीवन तल्ख हो गया है। व्यक्ति जीवन की इसी उलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है।"[11]

प्रेम समस्या का बड़ा ही मार्मिक चित्रण कमलेश्वरजी ने "तीसरा आदमी" उपन्यास में किया है। "मैं" चित्रा का पति है। वह शक की आँधी में तिलमिलाता है···"रातों में जब "मैं" चित्रा को अपनी बाहों में लेता तो एक अजनबी गंध फूटती। वह छाया कहीं में मंडराती हुई आती थी। जब "मैं" उसकी बाहों पर हाथ रखता तो वहाँ के हाथ पहले से मौजूद होते थे। वह छाया मुझे चित्रा के पास पहुँचने से रोकती थी···चित्रा की आँखों में जब मैं झाँकता था, तो वहाँ चार आँखें झाँकती होती थी····चार बाहें उसे कस रही थी। चार होंठ उसे प्यार कर रहे होते थे।"[12]

कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या का चित्रण अपने "आगामी अतीत" उपन्यास में किया है। कमलबोस डाक्टरी की पढ़ाई के लिए दार्जिलिंग आते हैं। यहाँ चंदा नाम की एक जड़ी-बुटी बेचनेवाली लड़की से उनका प्यार होता है। वे उससे वादा करते हैं कि डाक्टरी की परीक्षा पूरी होने के बाद शीघ्र ही चंदा से विवाह करेंगे। चन्दा कमलबोस की बातों मे विश्वास करती है और फँस जाती है। कमलबोस इधर एक निरूपमा नाम की रईस लड़की से ब्याह कर लेते हैं, पर शीघ्र ही उसकी मौत हो जाती है। कमलबोस को फिर चंदा की याद आती है। वे उसकी तलाश में निकल जाते हैं। इधर कमलबोस का इंतजार करते-करते चंदा पागल होकर आखिर एक दिन दम तोडती है। इससे पहले चंदा की किसी जंगली हरकारे से शादी हो जाती है। उसे एक बेटी भी पैदा हो जाती है, जिसका नाम है चांदनी। कमलबोस अक्सर चंदा के साथ बेइमानी करके बड़ी भूल करते हैं। चंदा की याद उन्हें हमेशा

सताती है। उन्हें कभी चैन लेने नहीं देती।

कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या को उजागर करते हुए कमलबोस की उदासी का चित्रण किया है। "मैं सिलीगुडी में हूँ। मैं वादा करके भी इंस्टीटयूट के फंक्शन में नहीं आ सका। मैं चंदा की तलाश में निकल पडा। नीली घाटी गया। फिर धौलपुर और धौलपुर से सिलीगुडी। आज यह पता लगा कि एक साल पहले चंदा स्वर्ग सिधार गयी है। मैं एक वर्ष देर से पहुँचा। अब मन बहुत उदास है।"[13]

3·5 वेश्या समस्या :-

कमलेश्वरजी ने अपने "आगामी अतीत" उपन्यास में वेश्या-समस्या का बखूवी चित्रण किया है। सामाजिक समस्या के अंतर्गत ही यह समस्या आती है। वेश्या समस्या के साथ-साथ इसमें प्रेम समस्या भी दिखाई देती है। वेश्याओं की अपनी-अपनी समस्याएँ होती हैं। कमलेश्वरजी ने चांदनी नामक एक वेश्या का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। चांदनी चंदा की बेटी है। चंदा जब पागल होती है तब उसे पागलखाने में डाला जाता है। उसके साथ उसकी बेटी चांदनी भी देखभाल करने के लिए जाती है। लेकिन कुछ दिनों बाद माँ चंदा की एक रात मौत हो जाती है। चार-पाँच पागल चांदनी को देखकर हँसने लगते हैं। उनमें एक हत्यारा भी था जिसने पागल का नकाब ओढ लिया था। जिस रात चंदा की मौत हो जाती है, उसी रात अकेली चांदनी को देखकर वह हत्यारा चांदनी को नंगी करके उसके दोनों जांघों पर बैठ जाता है। उस पर रेप करता है। चांदनी के सामने दूसरा कोई रास्ता भी नहीं। उसके बाद वह सीधे चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है।

कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में चांदनी की मजबूरी का चित्रण किया है। चांदनी का चरित्र बेजोड है। उसका कथन है···"हाँ। ठीक कह रही हूँ, तुम अमीरों के ये इश्क-विश्क के चोंचले अपने लिए बेकार हैं। हम इश्क नहीं करते। पेट भरते हैं, पेट। पाँच मिनट में एक आदमी फारिग हो जाता है····समझे।

यही सब करना है तो हमारे यहाँ एक बुढिया भी है वह पचास रूपये महीने में चली जायेगी। औरत रखने की तुम्हारी हवस भी पूरी हो जायेगी और पैसा भी बच जायेगा।"[14]

वास्तव में "आगामी अतीत" में चांदनी का चरित्र सबसे अधिक प्रभावपूर्ण बना है। चांदनी चंदा की बेटी है। एक वेश्या के रूप में उसका चरित्र लेखक ने प्रस्तुत किया है। चंदा की मौत के बाद एक पागल हत्यारा चांदनी पर बलात्कार करता है। उसके सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाता। वह चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है। वह सारी कहानी एक दिन कमलबोस को बता देती है।

"कमलबोस" आगामी अतीत का मुख्य पात्र है। वह डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए दार्जिलिंग आता है। यहाँ पर चंदा और कमलबोस की पहचान हो जाती है। पहचान फिर प्यार में बदल जाती है। कमलबोस वादा करके चला जाता है, पर लौट नहीं पाता। एक लम्बे अंतराल के बाद वह लौट आता है। तब उसकी भेट चंदा से नहीं बल्कि चंदा की बेटी चांदनी से होती है। चंदा जड़ी-बुटी विकने का काम करती रहती है। कमलवोस से वह प्रेम करने लगती है पर शहर जाने पर वह चंदा को भूल जाता है। बेचारी चंदा उसका इंतजार करते-करते पागल हो जाती है और अंत में मर जाती है।

3·8 निष्कर्ष :-

सारांश यही कि कमलेश्वरजी ने अपने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से लेकर "आगामी अतीत" तक अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ साम्प्रदायिक, प्रेम, वेश्या आदि बहुतसी समस्याओं का बखूबी चित्रण किया है। उनका प्रत्येक उपन्यास कोई-न-कोई समस्या को सामने लेकर हमेशा आता है। अतः इस दृष्टि से देखा जाय तो उनके सभी उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास हैं। कमलेश्वरजी का सबसे पहला उपन्यास "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला" सामाजिक समस्या को लेकर लिखा गया है। "डाक बंगला" के अंतर्गत प्रेम समस्या भी उजागर

होती है। "लौटे हुए मुसाफिर" में भी सामाजिक समस्या के साथ-साथ साम्प्रदायिक समस्या भी दिखाई देती है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में आर्थिक समस्या का चित्रण हुआ है। "आगामी अतीत" उपन्यास में सबसे पहले प्रेम समस्या दिखाई देती है और इसके साथ ही साथ वेश्या समस्या भी निर्माण हो जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सभी समस्याएँ सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत आ जाती हैं। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में समकालीन समस्याओं को उद्घाटित किया है। उपर्युक्त सभी उपन्यासों में जो समस्याएँ चित्रित की गयी हैं ये सभी सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत आ जाती हैं।

संदर्भ

1· एक सड़क सत्तावन गलियाँ / कमलेश्वर / पृ·3

2· एक सड़क सत्तावन गलियाँ / कमलेश्वर / पृ·16

3· डाक बंगला / कमलेश्वर / पृ·47

4· डाक बंगला / कमलेश्वर / पृ·46

5· लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·40

6· लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·17

7· लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·17

8· लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·151

9· एक सड़क सत्तावन गलियाँ / कमलेश्वर / पृ·87

10· एक सड़क सत्तावन गलियाँ / कमलेश्वर / पृ·25, 26

11· हिन्दी लघु उपन्यास / घनश्याम मधुप / पृ·169

12· तीसरा आदमी / कमलेश्वर / पृ·82, 83

13· आगामी अतीत / कमलेश्वर / पृ·67

14· आगामी अतीत / कमलेश्वर / पृ·96